

परिचय: जलपुरुष डॉ० राजेन्द्र सिंह

“जलपुरुष” या “वाटरमैन ऑफ इंडिया” के रूप में विश्व में लोकप्रिय डॉ० राजेन्द्र सिंह नदियों को पुनर्जीवित करने वाले पर्यावरणविद् हैं। आपका जन्म 06.08.1959 को डौला गांव, बागपत, उत्तरप्रदेश में हुआ। आप मूलतः आयुर्वेद स्नातक, हिन्दी साहित्य स्नातकोत्तर हैं। आप कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय धारवाड़, कर्नाटक से 2014 में कृषि विज्ञान में सर्वोच्च मानद उपाधि, पूर्णिमा विश्वविद्यालय जयपुर से 2016 में अभियांत्रिकी सर्वोच्च मानद उपाधि तथा ऐ. पी. जे. अब्दुल कलाम प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लखनऊ से 2019 में प्रौद्योगिकी सर्वोच्च मानद उपाधि, वर्ष 2022 में आपको आर. एन. बी. ग्लोबल विश्वविद्यालय बीकानेर से साहित्य तथा स्वामी विवेकानंद ग्लोबल विश्वविद्यालय, जयपुर से सामाजिक कार्य में सर्वोच्च मानद उपाधि से विभूषित किया। वर्ष 2023 में जनार्दन राय नागर राजस्थान, विद्यापीठ विश्वविद्यालय, द्वारा विज्ञान में सर्वोच्च मानद उपाधि और काजीरंगा विश्वविद्यालय कोरेखोवा, जोरहाट, असम द्वारा दर्शन शास्त्र में भी सर्वोच्च मानद उपाधि से विभूषित किया है।

डॉ० राजेन्द्र सिंह कई अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं; जिनमें से मुख्यतः समुदायिक नेतृत्व हेतु “रेमन मैग्सेसे पुरस्कार”—2001 में, ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी उपयोग के लिए “जमनालाल बजाज पुरस्कार” 2005 में तथा द गार्जियन ने आपको “2008 में विश्व के उन 50 लोगों की सूची में शामिल किया, जो पृथ्वी ग्रह को बचा सकते हैं।” पानी के लिए नोबेल पुरस्कार “स्टॉकहोम वॉटर प्राइज” से 2015 में सम्मानित हुए। हाउस ऑफ कॉमन्स, यूनाइटेड किंगडम से 2018 में “अहिंसा” सम्मान, अमेरिका सियटल से 2019 में “अर्थ रिपेयर” तथा नई दिल्ली से 2019 में “पृथ्वी भूषण” सम्मान मिला है। जी. डिजिटल द्वारा 2022 में ‘लाईफ टाईम अचिवमेंट पुरस्कार’ और राष्ट्रीय कन्वेंशन सिविल इंजीनियर्स द्वारा ‘दा फ्यूचर अवॉर्ड’ दिया गया। वर्ष 2023 में जल संरक्षण व सामाजिक कार्यों के लिए हिमालयन इंस्टीट्यूट हॉस्पिटल ट्रस्ट द्वारा ‘स्वामीराम मानवता पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया। फरवरी 2024 में जल संरक्षण और नदी पुनर्जनन के क्षेत्र में किए गए अद्वितीय कार्य के लिए एमआईटी वर्ल्ड पीस यूनिवर्सिटी, पुणे द्वारा “भारत अस्मिता

राष्ट्रीय पुरस्कार” से सम्मानित किया गया। मार्च और अप्रैल 2024 में, उन्हें जल संरक्षण, पर्यावरण संवर्धन और सामाजिक कार्यों के लिए चिरमुले चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा “चिरमुले पुरस्कार 2022” से सम्मानित किया गया और श्री दत्त शेतकारी सहकारी साखर कारखाना लिमिटेड शिरोल, महाराष्ट्र द्वारा “समाजभूषण पुरस्कार 2024” से सम्मानित किया गया। 28 अक्टूबर 2024 को सवाई जयपुर अवार्ड्स 2024 में “मिर्जा राजा राम सिंह” पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने और पर्यावरण में सुधार लाने में उत्कृष्टता के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दिसंबर 2024 में किसान ट्रस्ट, दिल्ली द्वारा “सेवा रत्न पुरस्कार” से सम्मानित किया गया।

डॉ० राजेन्द्र सिंह 1975 में स्थापित ‘तरुण भारत संघ’, वर्ष 1999 में स्थापित राष्ट्रीय जलबिरादरी तथा 2022 में स्थापित सुखाड़-बाढ़ विश्व जनआयोग, स्वीडन के अध्यक्ष हैं। राजस्थान, अलवर जिले की थानागाजी तहसील के गाँव भीकमपुरा-किशोरी में सरिस्का टाइगर रिजर्व के पास इनका मुख्यालय है। ये इसी गांव में रहते हैं।

गोपालपुरा गांव के माँगू मीणा ने इनके उपचार से ठीक होकर कहा कि “लोगों का इलाज बंद करो, धरती का इलाज करो।” इन्हीं से सीखकर धरती का इलाज करने हेतु जल का वाष्पीकरण को रोकने तथा जल-संरक्षण, भू-संरक्षण व भूजल पुनर्भरण करने का काम 1985 में गोपालपुरा गाँव से प्रत्यक्ष रूप में शुरू किया।

50 वर्षों से तरुण भारत संघ ने समाज को तैयार करके, उन्हीं की मदद से **15000 से ज्यादा जल संरचनाओं** का निर्माण कराया है। इन्होंने देश के 1500 से अधिक गाँवों को पानीदार बनाया है। परिणामस्वरूप देश में 23 नदियों— अरवरी, रूपारेल, सरसा, भगाणी—तिलदह, महेश्वरा, साबी, तेवर, सैरनी, पार्वती, नौरा, बद्यह, भवानी, नेहरो, भमाया, खर्राबाई, कोटवारी, निभेरा व जहाजवाली नदी को राजस्थान में, अग्रणी व महाकाली को महाराष्ट्र में, तथा ईचनहल्ला नदी को कर्नाटक में पुनर्जीवित किया है। इन्ही कार्यों का प्रभाव है कि **10600 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन, अनुकूलन और उन्मूलन में सफलता प्राप्त की है।** यह आज दुनिया का एकमात्र उदाहरण है। 21वीं सदी में ये उजड़े, बेपानी समाज और नदियों को पानीदार बनाने का काम कर रहे हैं।

“जल नैतिकता, न्याय और विश्वशांति यात्रा” 17 अप्रैल 2015 से अफ्रीका और मध्य व पश्चिम एशिया तथा यूरोप के देशों में चलाई है। उजड़े हुए लोग यूरोप के देशों में जहाँ-जहाँ बस रहे हैं, उन सबको इन्होंने अपनी यात्रा का केन्द्र बनाया है। अफ्रीका के 40 देश, मध्य व पश्चिम एशिया के 40 देश तथा यूरोप के 40 देश, इस प्रकार 120 से ज्यादा देशों में यह यात्रा चलाई है।

चंबल क्षेत्र की सैरनी, पार्वती, तेवर और नेहरो नदी के सैकड़ों गांवों में जल संरक्षण के द्वारा हजारों बंदूकधारियों की बंदूकें छुड़वाकर, उन्हीं की जमीन पर पानी उपलब्ध कराके, खेती के काम में लगाकर, हिंसक डाकूओं को अहिंसक किसान बनाने का काम किया है। वर्ष 2022-23 में दुनिया के सैकड़ों देशों में जल शांति के लिए 544 कार्यक्रम आयोजित कराए हैं, इनमें हजारों लोगों को तैयार करके, सुखाड़-बाढ़ मुक्ति की युक्ति सीखाकर जल संरक्षण के काम में लगाया है।

इन्होंने अपने 50 वर्षों के जलवायु परिवर्तन, अनुकूलन और उन्मूलन के सफल अनुभवों को बाँटकर, प्रकृति और मानवता को सम्मान देने का प्रेरणादायी काम किया है। परिणामस्वरूप बहुत से युवाओं में पानी और प्रकृति का चिंतन बढ़ा है। वे लालची विकास से हटकर प्रकृति पुनर्जनन के कार्यों में जुट रहे हैं। इन्होंने इन वर्षों में दो दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखी है।

इनके द्वारा लिखित पुस्तकें— मैं जल हूँ, विस्थापन ही विश्वयुद्ध का बुलावा है, पुनर्जीवित सभ्यता की सरिता: पार्वती-सैरनी, जलपुरुष की जल यात्रा, सभ्यता की सूखती सरिता, जल स्वराज्य, तीर्थ बचाओ जुड़ाव, पुनर्जीवित नदी ‘नेहरो’, विश्व शांति के प्रयास, विरासत बचाओ यात्रा, अविरल गंगाजल साक्षरता यात्रा, गंगा अविरलता यात्रा, महेश्वरा नदी, सीखती सिखाती अरवरी, गंगा सद्भावना यात्रा (श्वेत पत्र), जल यात्रा, अरावली के आंसू, सामलात देह प्रबंधन (जलपुरुष जी, डॉ गुरुदास अग्रवाल), गंगा क्यों बने एक राष्ट्रीय नदी प्रतीक? (जलपुरुष, अरुण तिवारी). काशी कुंभ, भारतीय आस्था एवम पर्यावरण रक्षा, गंगा जनादेश, पानी पंचायत व अंग्रेजी की The Ganga people's mandate, Environment conservation and Indian Consciousness, The Waterman's Journey Rashtriya Jal Yatra, Rejuvenation of Rivers: Climate resilience. Livelihood. Dignity: Living Examples –Rajendra Singh and Indira Khurana, Rejuvenation of Rivers: Climate resilience. Livelihood. Dignity: Living Examples. An epilogue – Rajendra Singh

and Indira Khurana (English), Drought, flood, and climate change: Global problems, local solutions. Water conservation for mitigation, adaptation and resilience: A reaffirmation – Rajendra Singh and Indira Khurana (English), Decentralised and equitable climate resilience through community knowledge, rainwater capture; Experience, Evidence – Rajendra Singh and Indira Khurana (English).

इन्हें अपने जल संरक्षण के काम के आरंभ से ही बढ़ते बाढ़-सुखाड़ की चिन्ता थी। वर्ष 2022 के विश्व जल सप्ताह, स्टॉकहोम, स्वीडन में भी इनकी चिन्ता दुनिया के लोगों सुनने के बाद और बढ़ गई। पूरी दुनिया, खासकर यूरोप, अमेरिका में बाढ़-सुखाड़ की नई मार झेलने वाले लोगों के साथ समाधान खोजने की पहल हुई। दुनिया भर के सुखाड़-बाढ़ प्रभावितों ने जलपुरुष राजेन्द्र सिंह से सुखाड़-बाढ़ मुक्ति की युक्ति को जानने का प्रयास किया। जलपुरुष जी ने अपने चार दशकों के अनुभव लोगों को बताए और इस दिशा में लोगों को प्रेरित करने की पेशकश की। 2 सितम्बर 2022, के.टी. एच., स्टॉकहोम, स्वीडन में “सुखाड़-बाढ़ विश्व जनआयोग” की स्थापना हुई और जलपुरुष राजेन्द्र सिंह जी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुना गया।

ये हर दिन नई जगह पर, नए लोगों में प्रकृति प्रेम बढ़ाने में जुटे हैं। ये पंचमहाभूतों को ही भगवान् मानते हैं। इन्होंने भगवान् शब्द को वैदिक काल में भारतीय जीवन पद्धति के व्यवहार व संस्कार से जोड़कर, सारगर्भित भ-भूमि, ग-गगन, व-वायु, अ-अग्नि और न-नीर को पूरी दुनिया को समझाने का गहराई से विस्तार दिया है। ये इसी काम में रात-दिन लगे हैं, इस कार्य को भारतीय आस्था में पर्यावरण रक्षा का व्यवहार व संस्कार बनाने की जीतोड़ कोशिश कर रहे हैं।

भगवान् सत्य है, इसकी समृद्धि में ही सम्पूर्ण जीव-जगत् की समृद्धि है; अहिंसामय रास्ता ही समृद्धि लाने का रास्ता है, यही इनकी मुख्य मान्यता है, जो इन्हें अहिंसामय रास्ते पर चलाती है। पानी और प्रकृति हेतु समर्पित होकर चेतना जगाने के काम में सफल हुए हैं। ये आजकल दुनिया को तीसरे विश्वयुद्ध से मुक्ति के

लिए सुखाड़-बाढ़ से मुक्ति की युक्ति सिखा रहे है।

डॉ राजेन्द्र सिंह नीर, नारी व नदी का सम्मान करके सभी को नारायण मानते हैं। सभी धर्मों व प्रकृति को प्यार-सम्मान करने वाला ही इनका मूल धर्म है। महात्मा गांधी का संदेश ही इनकी जीवन पद्धति है। इसीलिए इन्होंने अपने जीवन में उन लोगों को ही, जिनके साथ ये जीते और काम करते हैं; उन्हीं से सीखकर, उन्हें उनकी शक्ति का अहसास जगाकर और समाज में काम करने का कौशल व दक्षता का आभास कराया है। ये स्वयं काम करके ही अपने अनुभवों को दूसरों में बांटते हैं।

इन्होंने 1991 में उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी, जिससे दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में अरावली को बचाया जा सका और 7 मई 1992 को अरावली संरक्षण अधिनियम बनवाया। इस कानून की पालना के लिए 2 अक्टूबर 1993 में हिम्मतनगर, गुजरात से 22 नवंबर 1993 दिल्ली तक हजारों लोगों के साथ पद यात्रा करके, अरावली पर्वतमाला को बचाने में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है और इनके जीवन की सबसे आक्रमक-संकटग्रस्त जीवन संघर्ष की सफलता के फलस्वरूप आज अरावली का दर्शन कर सकते हैं। इस काम के प्रभाव से पूरे भारत के जंगलों को बचाने के लिए, नई चेतना जाग्रत कर जल, जंगल, जमीन, जंगली जानवरों और जंगलवासियों को समग्र संरक्षण की पैरवी प्रक्रिया को विस्तार दिया है। खनन के कारण होने वाली बीमारी को रोककर जल, जंगल, जमीन संरक्षण करके हरियाली से समृद्धि दी है। ये गाँव कोविड-19 से भी मुक्त रहे हैं।

इन्होंने गंगा नदी की प्रमुख धारा भागीरथी नदी पर बन रहे लोहारी नागपाला, पाला मनेरी और भैरोघाटी के बाँधों को तरुण भारत संघ के उपाध्यक्ष रहे प्रो. जी.डी. अग्रवाल के साथ रद्द कराके गंगा जी को अविरलता प्रदान कराने का रास्ता खोला है। यह भारत में पहला उदाहरण था, जब गंगा नदी को अविरलता प्रदान करने की बात को केन्द्र व राज्य सरकारों ने स्वीकार किया।

ये पारम्परिक जल संरक्षण ज्ञान, भूमिगत जल भण्डारों का पुनर्भरण और प्राकृतिक संसाधनों पर सामुदायिक प्रबंधन की वकालत करते हैं। भूजल का अधिकार सरकारों और उद्योगपतियों को ही नहीं है, ये भू-जल पर पूरी प्रकृति और

मानवता का बराबर अधिकार दिलाने हेतु लड़ाई लड़ते रहे हैं। देश भर के सभी राज्यों में जल साक्षरता यात्राएँ, जल चिंतन शिविर, जलसंगोष्ठी व जल सम्मेलन, 111 दलों द्वारा आयोजित कराके जल ग्राम-सभा और नदियों के लिए नदी संसद् का गठन करवाया है।

इन्हें जल संरक्षण और प्रदूषण मुक्त नदियों को पुनर्जीवित करने व जनता के लिए, जनता द्वारा पदयात्राओं से शिक्षण के लिए जाना जाता है। गंगा नदी की अविरलता के लिए “अविरल गंगाजल साक्षरता यात्रा”, अप्रैल 2015 में तथा “जल नैतिकता, न्याय और विश्वशांति यात्रा” शुरू की थी। यह 120 देशों से अधिक में सुखाड-बाढ़ मुक्ति व जल विश्व युद्ध मुक्ति हेतु चालू है।

इन्होंने वर्ष 2022 में ‘चला जानुया नदीला’ महाराष्ट्र 109 नदियों पर, नदियों के साथ लोगों को जोड़ने व स्टेट्स रिपोर्ट बनवाने का काम राज, समाज को नदियों से जोड़कर आरंभ कराया। 2015 में इसी राज्य में जल साक्षरता व जलयुक्त शिवार का काम भी शुरू करवाया था।

अपने सामाजिक सक्रिय जीवन के पिछले 50 वर्षों में जलवायु परिवर्तन, अनुकूलन और उन्मूलन के मुद्दों को स्थानीय समुदायों के प्रयास से समाधान प्रदान किया है। इन्होंने जल संरक्षण के माध्यम से समुदाय को सशक्त बनाने और भू-जल बैंकों को पुर्नभरण करने का काम किया है। यह “दुनिया में पहला उदाहरण है”, जब दुनिया में अतिक्रमण, प्रदूषण और शोषण को रोकने की आवाज बनकर समाज को खड़ा किया जा रहा है।

इनका मानना है कि, आज पानी की समस्याओं को केवल विज्ञान या प्रौद्योगिकी द्वारा हल नहीं किया जा सकता, सामुदायिक विकेन्द्रित नीति, नेतृत्व और सामाजिक ज्ञान ही इसके स्थानीय समाधान हैं। इस विज्ञान को भारतीय ज्ञानतंत्र में नालंदा ने सामुदायिक जल प्रबंधन को पानी पंचायत के माध्यम से सदियों पहले प्रचलित था, अभी जल स्वराज और पानी पंचायत द्वारा ये इसे अपने व्यवहार और काम से पुनर्जीवित करके, आगे बढ़ा रहे हैं। स्थानीय व छोटे-छोटे प्रयासों-प्रयोगों की सफलताओं की सिद्धि द्वारा “जल ही जलवायु और जलवायु ही जल है” सिद्धांत को संयुक्तराष्ट्र संघ में मान्यता दिलाई है।

डॉ० राजेन्द्र सिंह एक कर्मठ और पूर्ण समर्पित कार्यकर्ता हैं। ये सरल, मितव्ययी, सत्य

और अहिंसामय विधि से मानवता और प्रकृति की समृद्धि हेतु सक्रिय हैं। इन्होंने विश्व में जल से शान्ति कायम करने का संकल्प लिया है। इनका संकल्प पूर्ण होवे/हमसब का भी इन्हें नैतिक बल और साथ मिले।